कांग्रेस के भीतर उग्रवादी आन्दोलन

उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक से ही कांग्रेस के भीतर उग्रवादी विचारधारा पनपने लगी थी। बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व में बहुत से राष्ट्रवादी ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष की बात करने लगे थे क्यों कि ब्रिटिश शासन की उदारता में उन्हें विश्वास नहीं था। ये उभरते हुये उग्रवादी सहयोग के द्वारा सुविधा प्राप्त करने के स्थान पर असहयोग द्वारा स्वराज पाने की पर बल दे रहे थे।

उग्रवादियों के उद्भव का एक कारण कांग्रेस के उदारवादियों की असफलता थी। उदारवादियों ने ब्रिटिश शासन के साथ सहयोग और वफादारी करके भी देश के लिये किसी विशेष सुविधा पाने में असफल रहे थे। ब्रिटिश सरकार ने उदारवादियों के किसी मांग पर ध्यान नहीं दिया। देश की दरिद्रता कायम रही, उद्योगों के विकास का मार्ग अवरुद्ध रहा एवं संवैधानिक सुधार भी नहीं हुआ। इस प्रकार भारतीयों को लगा कि ब्रिटिश शासन के प्रति निष्ठा रखने से देश का कल्याण नहीं होगा बल्कि स्वराज्य के लिये संघर्ष करना पड़ेगा। लाला लाजपत राय ने कहा कि बीस वर्षों के संघर्ष के बाद कांग्रेस को रोटी के बदले पत्थर मिले। इस प्रकार उदारवादियों के नीतियों के प्रतिक्रियास्वरूप उग्रपंथियों (गरमपंथियों) का उद्भव हुआ।

ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीति से भी उग्रवादी आन्दोलन के उद्भव हेतु परिस्थिति का निर्माण हुआ। ब्रिटिश शासन देश के संवैधानिक सुधारों के लिये कोई कार्य नहीं कर रही थी। 1892 ई. के अधिनियम से राष्ट्रवादी असंतुष्ट थे। सिविल सर्विसेज की परीक्षा को भारत में भी आरंभ करने संबन्धी प्रस्ताव को लागू नहीं किया गया था। 1878 ई. के प्रेस अधिनियम द्वारा भारतीय समाचार पत्रों पर कठोर सेंसर लगा दिया गया था। लार्ड कर्जन ने कलकत्ता कॉरपोरेशन अधिनियम के द्वारा स्थानीय

स्वशासन के विकास को अवरुद्ध कर दिया था एवं विश्वविद्यालय अधिनियम के द्वारा शिक्षण संस्थान में सरकारी नियंत्रण को बढ़ा दिया था। इसी प्रकार सरकारी गोपनीयता अधिनियम द्वारा प्रेस तंत्र का गला घोंटने का प्रयास किया गया था।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में होने वाले उग्र हिन्दू सांस्कृतिक जागरण का प्रभाव भी उग्रवादी आन्दोलन पर था। आर्य समाज ने हिन्दू संस्कृति की सर्वोच्चता पर बल दिया था। स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका के शिकागो शहर में अपने व्याख्यान द्वारा जिस प्रकार हिन्दू संस्कृति को गौरवान्वित किया था उससे भारतीयों में स्वाभिमान की वृद्धि हुई। बहुत से हिन्दू और विदेशी भी हिन्दू संस्कृति की सर्वोच्चता में विश्वास करने लगे थे। मिसेज एनी बेसेंट ने कहा था कि समस्त हिन्दू प्रणाली पश्चिमी सभ्यता से बढ़कर है। इस प्रकार सांस्कृतिक चेतना ने राजनीतिक चेतना को भी उग्र बना दिया। बाल गंगाधर तिलक ने 1895 में गणपति उत्सव एवं 1896 में शिवाजी उत्सव को मनाना आरंभ कर दिया था। लाला लाजपत राय एवं अरविंद घोष पर भी उग्र सांस्कृतिक चेतना का प्रभाव पड़ा था।

विदेशों में हो रहे राजनीतिक घटनाओं का भी प्रभाव भारत में पड़ा जिससे उग्रवादी आन्दोलन का विकास हुआ। एक छोटा देश अबीसीनिया ने इटली को परास्त कर दिया एवं जापान ने रूस को परास्त किया। जापान के उत्थान ने भारतीय राष्ट्रवादियों के लिये प्रेरणा का काम किया। उन्हें अनुभव हुआ कि अगर छोटा सा देश जापान प्रगति करके यूरोपीय देशों के समकक्ष आ सकता है तो भारत भी ऐसा कर सकता है। दक्षिण अफ्रीका में भी भारतीयों की दुर्दशा को सुन के कांग्रेस के नेता दुखी थे।

उग्रवाद की उत्पत्ति का तात्कालिक कारण लार्ड कर्जन का बंगाल विभाजन की घोषणा थी। 19 जुलाई ई० 1905 ई० को कर्जन ने बंगाल विभाजन की घोषणा की एवं 16 अक्टूबर 1905 ई० को बंगाल को पूर्वी तथा पश्चिमी भागों में विभक्त कर दिया। कर्जन के इस विभाजन

का कारण प्रशासनिक सुविधा को बताया परंतु इसका वास्तविक कारण राष्ट्रीय आन्दोलन को कमजोर करना था। इस विभाजन के द्वारा पूर्वी बंगाल को मुस्लिम बहुल प्रान्त का दर्जा देकर कर्जन ने सम्प्रदायवाद को प्रोत्साहित किया। यद्यपि बंगाल विभाजन से उदारवादी भी नाराज थे किंतु इसने उग्रवादियों के जुझारू संघर्ष के लिये भूमिका निर्माण कर दिया।

उग्रवादी आन्दोलन को बाल गंगाधर तिलक लाला लाजपत राय एवं विपिन चंद्र पाल के विचारों से भी प्रेरणा मिली। इन नेताओं ने ब्रिटिश शासन के प्रति घृणा फैलाने में अहम भूमिका अदा की एवं भारतीयों में आत्म सम्मान की भावना को बढ़ाया। लाला लाजपत राय का कहना था कि अंग्रेज भिखारी से घृणा करते हैं, इसलिये हम साबित कर दें कि हम भिखारी नहीं हैं। इसी प्रकार तिलक ने स्वराज पर बल दिया। अरविन्द घोष का कहना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता एक राष्ट्र का प्राण वायु है। इस प्रकार के विचारों से देश में उत्तेजना की लहर दौड़ पड़ी।

बंगाल विभाजन के खिलाफ कांग्रेस ने स्वदेशी आन्दोलन आरंभ किया। आरंभ में यह आन्दोलन सुरेन्द्रनाथ बनर्जी जैसे उदारवादी नेताओं के हाथ में रहा किंतु बाद में इसका नेतृत्व उग्रवादी नेताओं के पास चला गया। 1905 ई० के बनारस अधिवेशन में उग्रवादियों ने बंग भंग-आन्दोलन को बंगाल के बाहर फैलाने पर जोर दिया जबकि उदारवादी नेता इसे बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे। इसके साथ साथ उग्रवादी नेता स्वदेशी आन्दोलन का उद्देश्य स्वराज की प्राप्ति रखना चाहते थे, जबकि उदारवादी नेता इसे बंगाल की एकता तक सीमित रखना चाहते थे। तीसरे उदारवादी नेता संवैधानिक विधि से ही आन्दोलन चलाना चाहते थे जबकि उग्रवादी नेता असहयोग एवं बहिष्कार की नीति द्वारा ब्रिटिश शासन पर दबाव डालना चाहते थे।

1906 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में उग्रवादियों के बढ़ते प्रभाव के कारण कांग्रेस ने अपना लक्ष्य स्वराज रखा। अध्यक्ष

दादा भाई नौरोजी के प्रभाव के कारण इस अधिवेशन में उग्रवादियों के मतभेद को टाला जा सका किंतु 1907 के सूरत कांग्रेस में अध्यक्ष के निर्वाचन के प्रश्न पर उदारवादियों एवं उग्रवादियों में तीव्र मतभेद उभरा तथा कांग्रेस का विभाजन हो गया।

उग्रवादी नेताओं ने स्वदेशी आन्दोलन के स्वरूप को विस्तृत किया। स्वदेशी आंदोलन के अन्तर्गत विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, विदेशी शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार एवं स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर जोर दिया गया। बहिष्कार आन्दोलन काफी सफल रहा। इसकी अवधारणा, कृष्ण कुमार मित्र और अरविन्द घोष ने दी थी। आरंभ में पीर मुहम्मद दीदार बख्श, लियाकत हुसैन, मुनीरुज्जमा, इस्माइल हुसैन शिराजी जैसे मुस्लिम नेताओं ने भी स्वदेशी आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई किंतु धीरे-धीरे मुसलमानों का सहयोग कम होने लगा।

महाराष्ट्र में तिलक ने स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व किया। गणपति उत्सव एवं शिवाजी उत्सव पर जोर देकर उन्होंने आम जनता को राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल होने के लिये प्रेरित किया। बंगाल में विपिनचन्द्र पाल, तिलक के सेनापति कहलाते थे। अरविन्द घोष ने उग्रवादी आन्दोलन को हिन्दू राष्ट्रवाद से जोड़ के इसे विस्तृत आधार दिया। पंजाब में लाला लाजपत राय एवं अजीत सिंह ने स्वदेशी आन्दोलन को फैलाया। दिल्ली में सैय्यद हैदर रजा और मद्रास में चिदम्बरम पिल्लै ने स्वदेशी आन्दोलन को फैलाया।

इस प्रकार उग्रवादी नेताओं के नेतृत्व में स्वदेशी आंदोलन ने एक हद तक अखिल भारतीय स्वरूप को प्राप्त किया। जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, 1857 ई. के विद्रोह के बाद पहली बार भारत दब्बू बनकर विदेशी शासन को स्वीकारने के बजाय लड़ रहा था। आंदोलन के दौरान स्वदेशी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना पर बल दिया गया। कलकत्ता के बंगाल नेशनल कॉलेज की स्थापना हुई जिसके प्रिंसीपल अरविंद घोष

डॉ. पी. सी. राय ने बंगाल केमिकल्स फैक्टरी की स्थापना की। बारीसाल के अश्विनी कुमार दत्त ने स्वदेश बांधव समिति का गठन करके हिन्दू मुस्लिम एकता को मजबूत आधार दिया।

स्वदेशी आन्दोलन ने सांस्कृतिक आयाम भी ग्रहण किया। विशेषकर यह आन्दोलन हिन्दू संस्कृति से अभिन्न रूप से जुड़ गई। तिलक ने गणपति एवं शिवाजी उत्सव पर बल देके हिन्दू चेतना को बढ़ावा दिया। लाला लाजपत राय ने आर्य समाज से उग्रवादी आन्दोलन को जोड़ दिया एवं अरविंद घोष ने काली पूजा तथा गंगा स्नान पर बल दिया। इस काल में उच्च कोटि के साहित्य की रचना हुई। अरविंद घोष ने लाइफ डिवाइन एवं सावित्री की रचना की। लाला लाजपत राय ने अनहैप्पी इंडिया लिखी एवं बाल गंगाधर तिलक ने गीता रहस्य एवं आर्कटिक होम्स ऑफ द वेदाज की रचना की। दक्षिणारंजन मित्र का ठाकुर मार झूली काफी लोकप्रिय रहा। रवीन्द्रनाथ टैगोर का आमार सोनार बांगला गीत बंगालियों का आदर्श था। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने चित्रकला के माध्यम से स्वदेशी को जाग्रत किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा रमेन्द्र सुंदर त्रिवेदी ने रक्षा बंधन को राजनीतिक एकता तथा भाई-चारे से जोड़ दिया।

1908 ई तक स्वदेशी आन्दोलन समाप्त हो गया। ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीति इसकी असफलता का मुख्य कारण बना उग्रवादियों से सम्मेलनों, संगठनों के प्रति सरकार ने कठोर कार्यवाही की। पुलिस अत्याचार ने आंदोलनकारियों को हतोत्साहित कर दिया। 1908 ई में प्रेस एक्ट बनाकर सरकार ने पत्र पत्रिकाओं पर कठोर सेंसर लगा दिया। कांग्रेस का विभाजन स्वदेशी आन्दोलन की असफलता का दूसरा कारण था। सूरत फूट के बाद उदारवादी एवं उदारवादी उग्रवादी अलग-अलग इस आन्दोलन को चला रहे थे जिससे आंदोलन मजबूत नहीं रह सका। नेतृत्व का अभाव, स्वदेशी आंदोलन की असफलता का तीसरा कारण था। 1907 ई में लाला लाजपत राय को देश छोड़ने का आदेश दिया गया। 1908 ई में तिलक गिरफ्तार हो गये।

आगे चलकर अरविन्द घोष भी गिरफ्तार हो गये। इस प्रकार नेतृत्व की की कमी हो गई। विशेषकर तिलक इस आन्दोलन के मुख्य प्रणेता थे, इसलिये इनकी गिरफ्तारी के साथ ही आंदोलन टूट गया। सांप्रदायिकता का विकास इस आन्दोलन की असफलता का चौथा कारण बना। आरंभ में मुस्लिम नेताओं ने भी इस आंदोलन में भाग लिया किंतु उग्रवादियों के द्वारा हिन्दू संस्कृति पर विशेष ज़ोर एवं ब्रिटिश शासन के फूट डालो और शासन नीति के कारण धीरे-धीरे मुसलमानों का सहयोग कम होने लगा। 1906 ई. में मुस्लिम लीग की स्थापना होने से मुसलमानों में सांप्रदायिक चेतना तेजी से फैली। मुस्लिम लीग ने बंगाल विभाजन का समर्थन एवं स्वदेशी आंदोलन का विरोध किया। 1906 ई. में पूर्वी बंगाल में सांप्रदायिक दंगा भी हुआ।

स्वदेशी आन्दोलन यद्यपि तात्कालिक उद्देश्य को पाने में सफल नहीं रहा तथापि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को इसने एक मजबूत आधार दिया। इसने महात्मा गांधी के असहयोग की पृष्ठभूमि का निर्माण किया। अब स्वराज पाना ही कांग्रेस का एकमात्र उद्देश्य हो गया। राष्ट्रीय आंदोलन में आम जनता के साथ-साथ महिलाओं की भी भागीदारी बढ़ी।

उग्रवादियों पर आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने धर्म से राजनीति को जोड़कर राष्ट्रवाद को कमजोर किया। तिलक के गणपति उत्सव, लाला लाजपत राय के आर्य समाजी विचारधारा एवं अरविन्द घोष के काली पूजा के परंपरा से मुसलमानों में भी सांप्रदायिक चेतना का विकास हुआ। लेकिन ऐसी बात नहीं है तिलक एवं अन्य नेताओं ने धार्मिक परंपरा पर सिर्फ इसलिये जोर दिया क्योंकि वे अनपढ़ एवं रूढ़िवादी लोगों को भी राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल करना चाहते थे। निश्चय ही उनके ये कार्य राजनीतिक रूप से प्रगतिशील थे परंतु उन्होंने जो विधियाँ अपनायीं उससे राष्ट्रीय आन्दोलन पर हानिकारक प्रभाव पड़ा। वस्तुतः यही कारण है कि उग्रवादियों को रूढ़िवादी राष्ट्रवादी कहा जाता है।